B.M.A. College, Baheri, Darbhanga

B.A.-I (Gen & Hons)
Deptt. of Sociology

Date: 05/09/2020
By Dr. Rajesh Kr.
Sociology

विषय: संदर्भ समूह

संदर्भ समूह का सर्वप्रथम प्रयोग समाजशास्त्री "हाईमैन" ने सन 1942 में अपने लेख "The Psychology of Status" में किया। इसके पश्चात शैरिफ ने अपनी पुस्तक "सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा" में व्यापक रूप से प्रस्तुत किया, तत्पश्चात, संदर्भ समूह की विस्तृत व्याख्या आर० के० मर्टन के लेखों में पाया जाता।

संदर्भ समूह का तात्पर्य यह है कि जब व्यक्ति एक समूह का सदस्य होते हुए दूसरे समूह का सदस्य बनने की इच्छा रखता है तो उसका समूह व्यक्ति का संदर्भ समूह होता है। मर्टन का कहना है कि व्यक्ति का अपने समूह के अंतर्गत दूसरे समूह को देखकर जब व्यक्ति के अन्दर सापेक्षिक-वंचिता का एहसास होता है, मतलब जब व्यक्ति अपने-आप को दूसरे समूह की तुलना में अभाव ग्रस्त होने का एहसास करता है तब वह दूसरे समूह का सदस्य बनने की इच्छा करता है। और यह दूसरा समूह जिसका कि व्यक्ति इच्छा करता है, संदर्भ समूह कहलाता है।

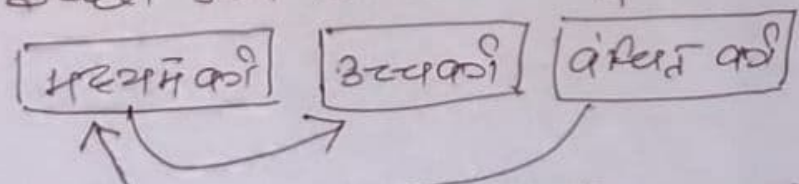

जैसे:-

मध्यम वर्ग स्वयं को उच्चवर्ग के जैसा बनाने का प्रयास करता है और ~~मध्यम वर्ग~~ वंचित वर्ग स्वयं को मध्यम वर्ग की तरह बनाने का प्रयास करता है या इच्छा रखता है। मर्टन कहते हैं कि जब उच्च वर्ग मध्यम वर्ग या वंचित वर्ग की तरह बनने की इच्छा (अपराधीकरण) रखते हैं या मध्यम वर्ग वंचित वर्ग (अपराधी, चोर, डकैत) की तरह बनने की इच्छा रखते हो तो यह उसका नकारात्मक संदर्भ समूह होता है। मर्टन के अनुसार दोनों ही परिस्थिति में, सापेक्षिक वंचित का एहसास (यानि कि अभाव से ग्रस्त) का होता है तो जिसका एहसास होता है वही व्यक्ति का संदर्भ समूह होता है।